घुमन्तुओं का डेरा

प्रभात
कलाः अतनु रॉय

एकलव्य का प्रकाशन

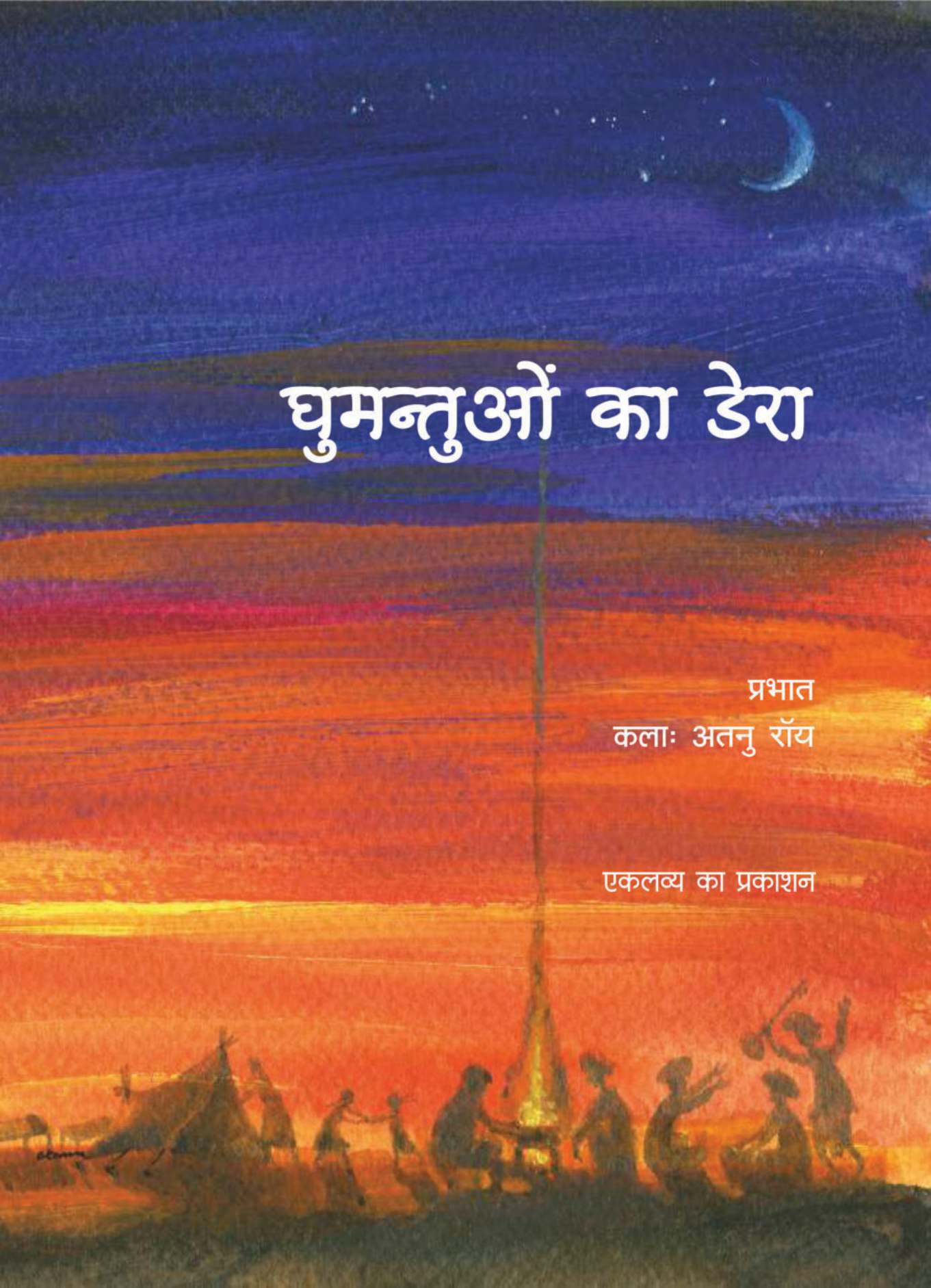

घुमन्तुओं का डेरा

प्रभात

कलाः अतनु रॉय

एकलव्य का प्रकाशन

इस कविता संग्रह के किनारे पर खड़े हैं हम। इससे पहले कि तुम इसमें उतरो एक-दो बातें करते जाओ।

कविताओं के इस गुच्छे का नाम है – *घुमन्तुओं का डेरा*। घुमन्तु कहीं एक जगह ठहरते नहीं हैं। उन्हें कहीं ठहरे देखकर हमें उनके ठहराव का ख्याल बाद में आता है। यह ख्याल पहले ही चला आता है कि वे कहाँ से आ रहे होंगे और अब कहाँ चले जाएँगे। इस संग्रह की तमाम कविताओं – पवन, बूँदें, मेघ, चिड़िया, बैलगाड़ी, बारिश, धुआँ, बंजारा, बादल.... – सबका स्वभाव घुमन्तुओं का ही तो है। इन सबमें चलने और रुकने की झिलमिल घुमन्तुओं के डेरे की तरह ही है।

कविता का भी यही स्वभाव होता है। जब हम उसे पढ़ते हैं तो मन में अनसुलझे से अर्थ का एक झरना फूट पड़ता है। हम हाथ बढ़ाकर हर बार उसे पकड़ने की कोशिश करते हैं। पर हर बार जब हाथ आई चीज़ देखते हैं तो लगता है कि जिसे पकड़ने को हाथ बढ़ाया था वह हाथ आए से जुदा है। कविता को देखना एक तरह से घुमन्तुओं को देखना बनकर आता है। कविता के डेरे को देखकर भी पहले ख्याल यह आता है कि वह कहाँ से चली आ रही है। ....और अब उसे किस तरफ चले जाना है।

अपट सूखी भादों की रात
उग न सकी नदियों के तट पर
बारहमासी घास (बरसे पानी रे, पेज 10)

इन पंक्तियों में इस कदर सूखापन है कि आँख भर आए। (प्रभात ने एक जगह नदी में पानी के कम होने को इस तरह देखा है – पानी नदी में, नदी की जैसे आँख भर आई)। कोई महीना सूखा चला जाए पर भादों का नहीं। बारहमासी घास इतनी जीवट होती है कि वह पानी नहीं बल्कि पानी की उम्मीद से ही पनप जाती है। इस टुकड़े में त्रासदी के दो बेहद ऊँचे सिरे हैं – एक तरफ भादों का सूखा चले जाना है और दूसरी तरफ नदी में पानी इतना कम है कि बारहमासी घास तक गुम है। बारहमासी घास एक तरह से हमारी दुनिया में हमारे ही साथ रह रहे सबसे संघर्षशील इन्सान की तरह है। इसी कविता के दूसरे सिरे पर अर्थ के दूसरे दरवाज़े खुले मिलते हैं। जहाँ रात कोई नदी है।

कविता को देखना एक तरह से नदी को देखना होता है। नदी बहे चली जाती है। जो पानी हमने अब देखा है वह पहले देखे पानी से अलग है। जैसे, नदी में पानी भर बदलता है, वैसे ही कविता में अर्थ भर बदलता है। जैसे नदी में किनारा भर स्थाई है वैसे ही कविता में शब्द भर स्थाई है। इसीलिए तो एक ही कविता को अलग-अलग उमरों में पढ़ने पर, अलग-अलग समयों में पढ़ने पर उसके अर्थ बदलकर आते हैं। यह कितने कमाल की बात है कि कविता और नदी हमारे हर बार के देखने को पहले-पहल का देखना बनाकर लाए चले जाती हैं।

बादल में से बूँदें उड़ गईं
उड़कर हो गईं फुर्र
उड़ती बूँदों को रस्ते में
मिला शहर जयपुर (बूँदें, पेज 5)

इस टुकड़े की बुनाई पर गौर करो। इसे दृश्य में पिरोकर देखो। कहने के अंदाज़ ने बात में मिठास भर दी है। लेकिन अगर इसकी बुनावट हटाकर इसे अर्थ में खोल दें तो बात बेहद साधारण हो जाएगी – जयपुर में बारिश हुई। बादल में से बूँदों के उड़ जाने की आज़ादी और उड़ते-उड़ते जयपुर का आना इस तरह हुआ है कि अभी और शहर आएँगे। ऐसे कई अर्थ इस कविता किनारे आते चले जाएँगे।

इस संग्रह के चित्र कविताओं के मिज़ाज से मेल खाते हैं। उनमें गति है। इतनी कि इन कविताओं की रफ्तार से चल पाएँ। वे कविता के बीच में नहीं आते। बल्कि उसे महसूस करने तक पहुँचने के लिए एक पुल की तरह काम आते हैं।

– सुशील शुक्ल
एकलव्य, भोपाल

पवन 4
बूँदें 5
चिड़िया 6
बैलों की जोड़ी 8
बरसे पानी रे 10
मेघों का धुआँ 12
चिड़िया तू घर क्यों नहीं जा रही है 14
घुमन्तुओं का डेरा 16
बंजारा नमक लाया 18
पुराना बादल 20
हवाओं की गाड़ी 22
खेल खिलैया में 24
मिलने वाले 26

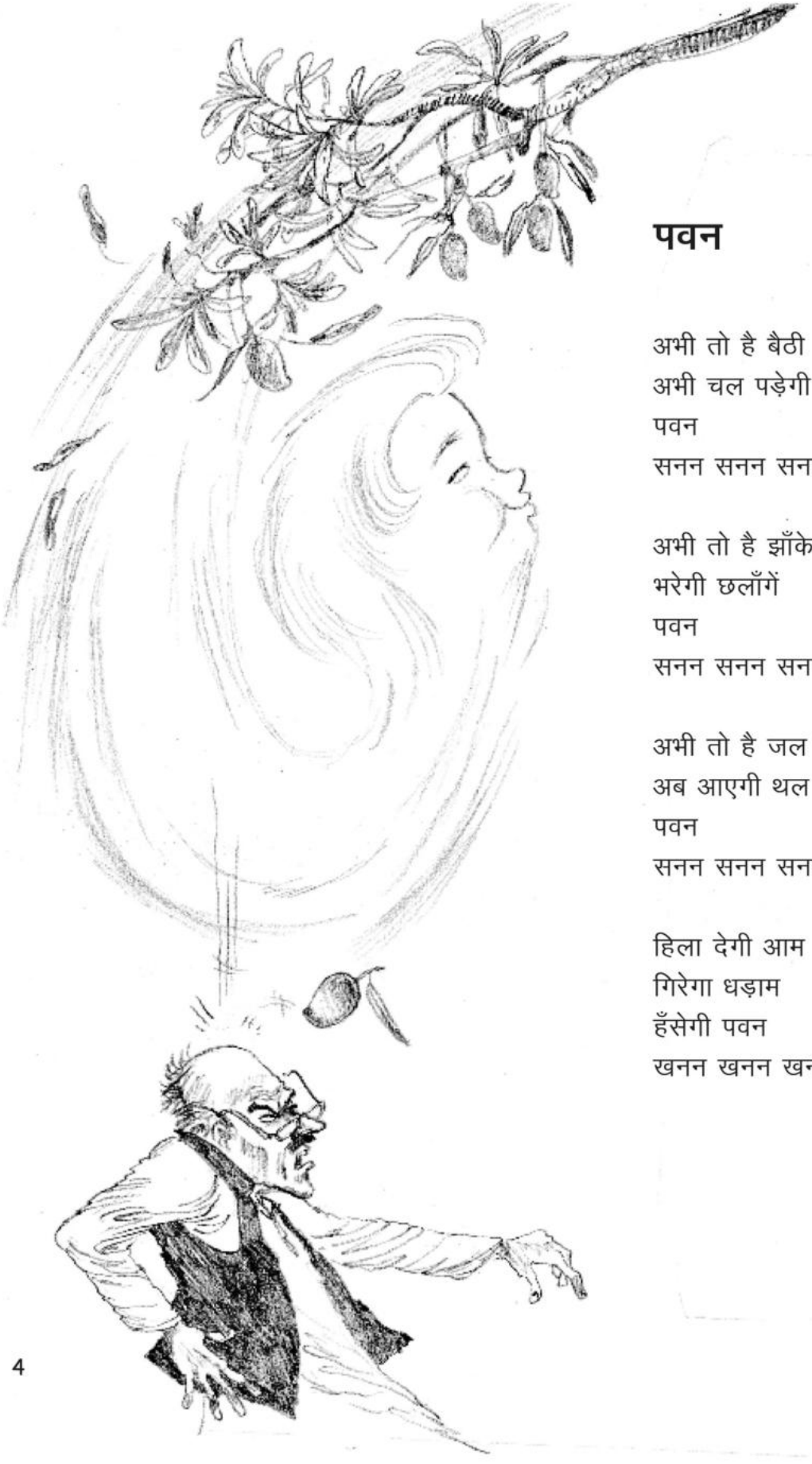

पवन

अभी तो है बैठी
अभी चल पड़ेगी
पवन
सनन सनन सनन

अभी तो है झाँके
भरेगी छलाँगें
पवन
सनन सनन सनन

अभी तो है जल पर
अब आएगी थल पर
पवन
सनन सनन सनन

हिला देगी आम
गिरेगा धड़ाम
हँसेगी पवन
खनन खनन खनन

बूँदें

बादल में से बूँदें उड़ गईं
उड़कर हो गईं फुर्र
उड़ती बूँदों को रस्ते में
मिला शहर जयपुर

वे तो वहीं बरस गईं ... आहा
कई तो वहीं पे बस गईं ... ओहो

कई तो हवामहल पर ... वा वा
कई छोटी चौपड़ पर ... ढम ढम

सांगानेरी गेट पे बरसीं
बूँदें तड़ तड़ तड़ तड़
जैसे ही बस आईं बूँदें
लगीं बैठने छत पर

कई तो चढ़ ना पाईं ... च्च च्च
चढ़ी जो उतर ना पाईं ... अरे

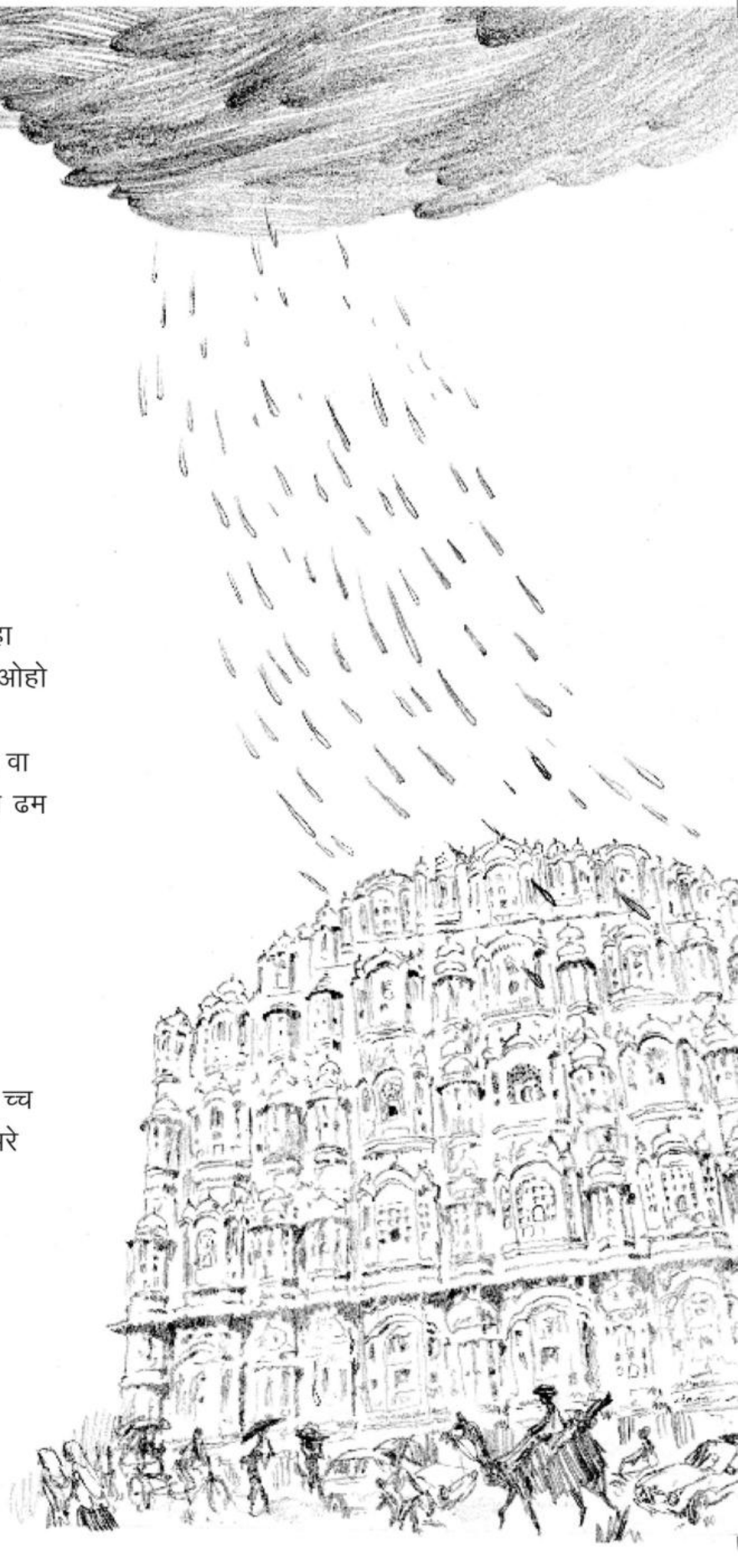

चिड़िया

पेड़ से पूछा
डाली से पूछा
लाली से पूछा
माली से पूछा
तब लाई चिड़िया
घोंसला धरने
घास का तिनका
सँवलाई चिड़िया

एक हरा सा
एक सूखा सा
एक उमगा सा
एक रूखा सा
चुन लाई चिड़िया
घोंसला धरने
घास का तिनका
सँवलाई चिड़िया

पेड़ में ऊपर
एक डाली पर
पत्तों के भीतर
गुपचुप छुपकर
धर आई चिड़िया
घोंसला धरने
घास का तिनका
सँवलाई चिड़िया

फूलों वाली
घास का तिनका
जौ की गेहूँ की
शाक का तिनका
खेतों से भी
है लाई चिड़िया
जंगल-जंगल
झाड़ी-झाड़ी
है धाई चिड़िया

बैलों की जोड़ी

दाएँ बैल का नाम था हीरा
बाएँ बैल का होरी
दोनों के जुड़ते ही सरपट
बैलगाड़ी दौड़ी
हीरा होरी बैलों की जोड़ी
दौड़ती
हीरा होरी जोड़ी जमी क्या
ज़ोर की

आम से तो अमिया गिरी
नीम से निबौरी
भौचक लगे देखने दोनों
हीरा और होरी

आम निबौरी खाने
बिल्लो ठहरी गिल्लो दौड़ी
गिल्लो बिल्लो हिल्लो मिल्लो
दौड़ती

गिल्लो बिल्लो जोड़ी जमी क्या
ज़ोर की
हीरा होरी बैलों की जोड़ी
दौड़ती

रास्ते में मोर मिला
बैठाया गाड़ी में
आगे कोई और मिला
बैठाया गाड़ी में

अपनी समझो
गाड़ी ना समझो और की
हीरा होरी बैलों की जोड़ी
दौड़ती

बरसे पानी रे

कब आएँगे मेघ बता दे
सोन चिरैया रानी रे
तू जो धूल में नहाए
बरसे पानी रे

आया माह आषाढ़ मगर
नहीं लाया कजल भोरें
सावन का महीना नहीं लाया
बूँदों भरी दोपहरें

अपट सूखी भादौं की रात
उग न सकी नदियों के तट पर
बारहमासी घास

कब आएँगे मेघ बता दे
सोन चिरैया रानी रे
तू जो धूल में नहाए
बरसे पानी रे

ताल और जंगल जोहें बाट
सूने घाट पड़े नदियों के
और गाँवों की हाट

लगे नहीं बाड़ी में तरबूज़
कहाँ पेट भरने जाएँगे
अब सियार और ऊँट

कब आएँगे मेघ बता दे
सोन चिरैया रानी रे
तू जो धूल में नहाए
बरसे पानी रे

मेघों का धुआँ

घिरे बादल
मची हलचल
लगी बहने
हवा झमझम
गिरा छमछम
बँधा पानी
रास्तों में
बहा पानी
गरज गड़गड़
झरा पानी
बरस कर जब
थमा पानी
हवा में था
घुला पानी
कि मेघों का
धुआँ पानी

आवाज़ें ही
आवाज़ें थीं
कहीं टिरटिर
कहीं पीं पीं
उधर झाड़ों ने
साँसें लीं
जंगलों में
बजी सीटी
रात गहरे
अँधेरे में
घने नीले
सवेरे में
सुनी हमने
सुनी तुमने
भीगे पत्तों में
टिपटिप सी
चहचहाहट सी
बूँदों की

चिड़िया तू घर क्यों नहीं जा रही है

चिड़िया तू घर क्यों
नहीं जा रही है

घर को गए ग्वाले
गैया भी गई घर को
सूरज गडरिया भी
तय कर सफर को

लेकिन तू मज़े से बन के
गीत गा रही है
चिड़िया तू घर क्यों
नहीं जा रही है

सारी सारी साँझ खेले
खूब न्हावे रेत में
रात में बिलाव आवे
बाजरे के खेत में

जाड़े में मरेगी ठण्डी
शीत आ रही है
चिड़िया तू घर क्यों
नहीं जा रही है

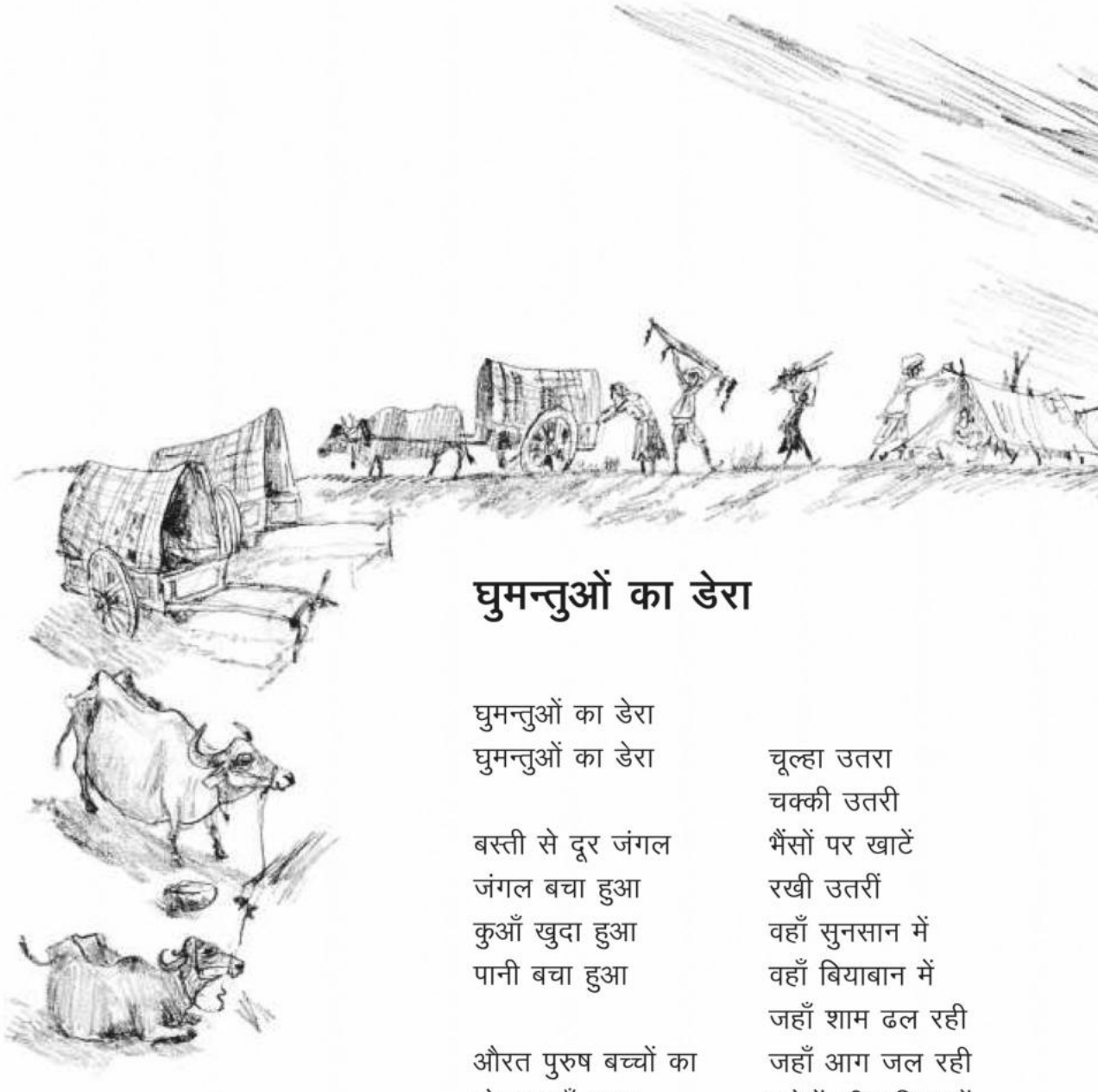

घुमन्तुओं का डेरा

घुमन्तुओं का डेरा
घुमन्तुओं का डेरा

बस्ती से दूर जंगल
जंगल बचा हुआ
कुआँ खुदा हुआ
पानी बचा हुआ

औरत पुरुष बच्चों का
टोला वहाँ रुका
सामान सब उतरा
पशुओं पे था लदा

चूल्हा उतरा
चक्की उतरी
भैंसों पर खाटें
रखी उतरीं
वहाँ सुनसान में
वहाँ बियाबान में
जहाँ शाम ढल रही
जहाँ आग जल रही
बसेरों की दुनिया में
अलग एक बसेरा

घुमन्तुओं का डेरा
घुमन्तुओं का डेरा

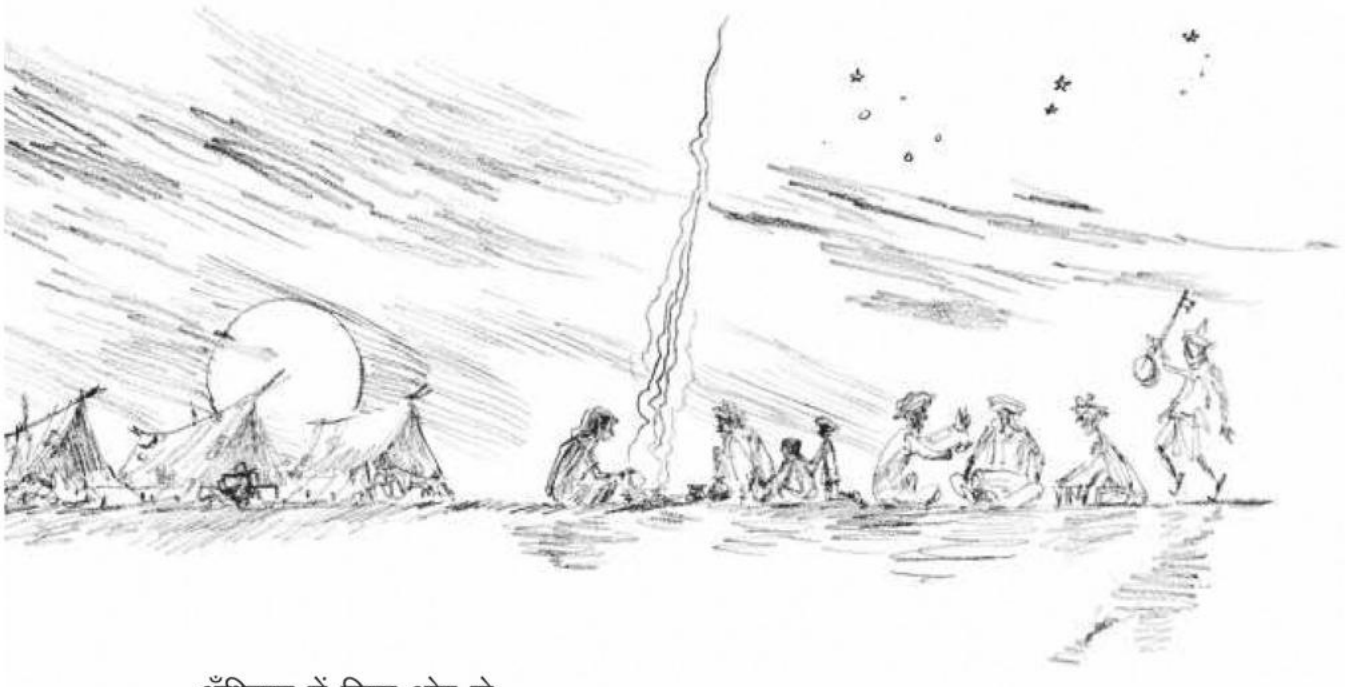

अँधियार में जिस ओर से
आवाज़ आती है
लोगों के बास बसने की
सुवास आती है
चूल्हा भी जल रहा है
बातें भी चल रही हैं
बच्चे भी खेलते हैं
मिट्टी भी उड़ रही है

तारे की तरह जा रहा
आकाश में जहाज़
बादल सा गरजता हुआ
रात में जहाज़
उसके आने को देख लेते
उसके जाने को देख लेते
वो भी है एक बस्ती
आकाश में विचरती
ये भी है एक बस्ती
धरती पे सदा चलती
मानो लगाती फेरा

घुमन्तुओं का डेरा
घुमन्तुओं का डेरा

बंजारा नमक लाया

साँभर झील से भराया
भैरू मारवाड़ी ने
बंजारा नमक लाया
ऊँटगाड़ी में

बर्फ जैसी चमक
चाँद जैसी बनक
चाँदी जैसी ठनक
अजी देसी नमक
देखो ऊँटगाड़ी में
बंजारा नमक लाया
ऊँटगाड़ी में

कोई रोटी करती भागी
कोई दाल चढ़ाती आई
कोई लीप रही थी आँगन
बोली हाथ धोकर आई
लाई नाज थाली में
बंजारा नमक लाया
ऊँटगाड़ी में

थोड़ा घर की खातिर लूँगी
थोड़ा बेटी को भेजूँगी
महीने भर से नमक नहीं था
जिनका लिया उधारी दूँगी
लेन देन की मची है धूम
घर गुवाली में
बंजारा नमक लाया
ऊँटगाड़ी में

कब हाट जाना होता
कब खुला हाथ होता
जानबूझकर नमक
जब ना भूल आना होता
फीके दिनों में नमक डाला
मारवाड़ी ने
बंजारा नमक लाया
ऊँटगाड़ी में

पुराना बादल

बादल तेरा रंग पुराना है
कम-कम बरसना
ज़्यादा गरजना
ढंग पुराना है

बादल तेरी शकल पुरानी है
कभी हाथियों की
कभी घोड़ियों की
ये नकल पुरानी है

बादल तेरा साज पुराना है
कभी तू दहाड़े
कभी तू चिंघाड़े
ये राग पुराना है

बादल तेरी रात पुरानी है
दिनों को बनाना
कजल काली रातें
ये बात पुरानी है

बादल तेरी डाक पुरानी है
सूखे में बूँदों की
चिट्ठी पहुँचा देना
साख पुरानी है

बादल तेरा घर पुराना है
नदी की चटाई
कोहरे की कढ़ाई
बिस्तर पुराना है

बादल तेरा रुआब पुराना है
नदियों की यादों में
ही रह गया वो
दोआब पुराना है

हवाओं की गाड़ी

हवाओं की गाड़ी चली
अनाड़ी बनी आँधी चली

धूल के गुबार के
छाते को तानकर
फूस भरे थैले को
कान्धे पे टाँगकर

गीत गाने गाती चली
धमाधम मचाती चली

चौक में बुलाई उसने
बच्चों की टोलियाँ
पहनाई बादल की
छाया की टोपियाँ
बूँदों की झालर तनी
पानियों की गाड़ी चली

पानी के ताल पर
छाता उतार कर
बैठी बुहार कर
सोई थक हार कर

भोर हुई जागी भागी
सुबह ही सुबह आँधी चली

खेल खिलैया में

गुपचुप सी टेर लगैया में
आ जाना एक बुलैया में

बादल की काजल छैया में
अच्छा लगे भगैया में

धूप की छुपम छुपैया में
चेहरा खिले खिलैया में

रिमझिम झूम झुमैया में
छम छम नाच नचैया में

डोल हवा की नैया में
अच्छा लगे घुमैया में

दौड़ेंगे भागेंगे
खेलेंगे कूदेंगे

बादल की काजल छैया में
तैरेंगे ताल तलैया में

गुपचुप सी टेर लगैया में
आ जाना एक बुलैया में

मिलने वाले

आईं बतखें गईं फूल से
छूमा-छामी करके
मुर्गा-मुर्गी गए दूर से
हूमा-हामी करके

पानी भरी हवाएँ भोर की
झूमा-झामी करके
नई सुबह की लाल धूप गई
चूमा-चामी करके

बादल बिजली आँधी पानी
धूमा-धामी करके
मिलने वाले गए फूल के
घूमा-घामी करके

घुमन्तुओं का डेरा
GHUMANTUON KA DERA
प्रभात
कलाः अतनु रॉय

कविताएँ © प्रभात
चित्र © अतनु रॉय

संस्करणः अप्रैल 2012 / 5000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो और 200 gsm पेपरबोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
ISBN: 978-81-89976-77-4
मूल्यः ₹ 30.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म. प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल (म.प्र.), फोनः 0755-268 7589

प्रभात

प्रभात हिन्दी के चर्चित कवि हैं। एक ही कविता को बच्चों-बड़ों दोनों के लिए सार्थक बनाने का तिलिस्म उन्हें आता है। बच्चों के साथ गपशप के शौकीन। सरल-सहज प्रभात शौकिया चित्रकार भी हैं। दर्जन भर किताबें प्रकाशित। फिलहाल बच्चों की पत्रिका *मोरंगे* देखते हैं। और कविता-बच्चे-सवाई माधोपुर की तिकोनी पतंग उड़ा रहे हैं।

अतनु रॉय

बीते चार दशकों से चित्रांकन में लीन।

आपको बच्चों की चित्रकथाएँ उकेरना सबसे आनन्ददायी लगता है। विभिन्न शैलियों और माध्यमों को बरतकर बच्चों के लिए सैकड़ों किताबें चित्रित कीं। पुस्तकों के रूपांकन व चित्रांकन करने और कार्टून बनाने के साथ-साथ उद्योग जगत के लिए ग्राफिक डिज़ाइनिंग भी की। संगीत, फोटोग्राफी और घूमने-फिरने के बेहद शौकीन। अनेक राष्ट्रीय, अन्तरर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी, रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्य प्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

इस किताब की सामग्री एवं सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्क: books@eklavya.in

ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016

सुनी हमने, सुनी तुमने

यह किताब कविताओं का एक मोहल्ला है। यहाँ कहने भर को ही सबके घर अलग हैं। कविताएँ रहती तो एक-दूसरे के घर में हैं। बूँदें, मेघ के घर रहती मिलेंगी... और बादलों के घर नदी। सुनो, मेघों के इस घर से आती चिड़िया-बूँद की आवाज़,

भीगे पत्तों में
टिपटिप सी
चहचहाहट सी
बूँदों की...

एकलव्य

मूल्य: ₹ 30.00
A0207H
ISBN: 978-81-89976-77-4
9 788189 976774
पराग SRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित